

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया में छह दिवसीय स्थापना दिवस समारोह और तालीमी मेले का भव्य समापन हुआ, जिसमें दिल्ली के उप-राज्यपाल श्री वी. के. सक्सेना मुख्य अतिथि के रूप में हुए शामिल

नई दिल्ली, 3 नवंबर, 2025.

जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) का 105वां स्थापना दिवस समारोह एक शानदार समापन समारोह के साथ संपन्न हुआ, जिसमें दिल्ली के माननीय उप-राज्यपाल श्री विनय कुमार सक्सेना मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। यह कार्यक्रम जेएमआई के कुलपति प्रो. मज़हर आसिफ़ और रजिस्ट्रार प्रो. मोहम्मद महताब आलम रिज़वी की उपस्थिति में आयोजित किया गया।

समापन समारोह की शुरुआत जामिया मिल्लिया इस्लामिया की एनसीसी विंग द्वारा दिल्ली के माननीय उपराज्यपाल को गार्ड ऑफ ऑनर देकर की गई, जिसके बाद अंसारी ऑडिटोरियम में मुख्य समारोह आयोजित किया गया। स्कूल की गायन टीम ने 'जामिया तराना' के मधुर गायन के साथ माननीय उपराज्यपाल का स्वागत किया, जिसके बाद कुलपति प्रो. आसिफ़ और रजिस्ट्रार प्रो. रिज़वी ने श्री सक्सेना का अभिनंदन किया।

अपने संबोधन में दिल्ली के माननीय उप-राज्यपाल श्री सक्सेना ने कहा कि जामिया मिल्लिया इस्लामिया के इस 105 साला यौमे तासीस (Foundation Day) के तारीखी और खुसूसी मौके पर, मुझे यहां आकर बेहद खुशी हो रही है। खासकर इसलिए क्योंकि, "मैं उन तलबा के दरमियान हूं, जिनके कंधों पर, इस अजीम मुल्क को, दुनिया का सरताज बनाने का दारोमदार है....।" उन्होंने कहा- "मुझे खुशी इस बात की भी है, कि आज जिस जामिया में हम हैं, उसके कयाम का तसव्वुर, बाबा-ए-कौम (राष्ट्रपिता) महात्मा गांधी..., और गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने, एक ऐसे इदारे के तौर पर पेश किया था, जो तमाम Communities के तलबा को, तरक्की पसंद तालीम..., और कौम परस्त नजरियात पेश करेगा।" औपनिवेशिक शासन के बेहद अशांत समय में जेएमआई की स्थापना को याद करते हुए, उन्होंने कहा कि "उस वक्त, देश में ऐसे तअलीमी इदारों की जरूरत थी, जहां तालीम के साथ-साथ, जद्दोजहद-ए-आजादी का पैगाम भी, आवाम के दरमियान फैलाया जा सके।" जेएमआई एक ऐसा संस्थान था जिसके बारे में जेएमआई के संस्थापकों को यकीन था कि "ये इदारा, तालीम के साथ-साथ, तलबा की किरदार-साज़ी (चरित्र निर्माण) कर, उनकी जिंदगियों को रोशन करने..., और मुल्क का मुस्तकबिल संवारने का काम करेगा।।"

श्री सक्सेना ने आगे कहा- "इन 105 बरसों में, जामिया एक ऐसा मजबूत दरख्त बन चुकी है, जिसकी शाखें, हर शोबे (Field) में लोगों को काबिल बना रही हैं। इस तरह से, आज यह एक मुकम्मल यूनिवर्सिटी बन चुकी है। मुझे बताया गया है कि, आज यह मुल्क में, चौथे नंबर की आला दर्जे की यूनिवर्सिटी बन चुकी है। यह देश की दूसरी यूनिवर्सिटीज़ के लिए भी एक मिसाल है। मैं इस बात से बखूबी वाकिफ हूं, कि यहां पढ़ने वाले तलबा, मुल्क के कोने-कोने से आते हैं, और मुल्क के मुस्तकबिल की तामीर में, अपना तआवुन (योगदान) देते हैं।"

दिल्ली के माननीय उपराज्यपाल, श्री सक्सेना ने कहा, "मुझे खुशी है कि शिक्षा के साथ-साथ जामिया देश के भविष्य निर्माण में भी प्रमुख भूमिका निभा रहा है। जामिया हमारी संस्कृति और परंपरा का प्रतीक है। आज इसका नाम पूरे देश में सम्मान और गरिमा के साथ लिया जाता है।"

दिल्ली के माननीय उप-राज्यपाल, श्री सक्सेना ने कहा कि जेएमआई के स्थापना दिवस समारोह में भाग लेते हुए, उन्हें हाफिज़ बनारसी का एक शेर याद आता है- **“चले चलिए, कि चलना ही दलील-ए-कामरानी है, जो थककर बैठ जाते हैं, वो मंजिल पा नहीं सकते”**

उन्होंने जामिया के छात्रों से आग्रह किया कि वे न केवल स्वयं शिक्षित हों, बल्कि दूसरों को भी शिक्षा के रत्नों से अलंकृत करने में अपनी भूमिका निभाएं क्योंकि "शिक्षा प्राप्त करना दैवीय आदेश है। ज्ञान के प्रकाश से ही हम उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं और बुद्धिमान बन सकते हैं।" उन्होंने उपस्थित छात्रों और शिक्षकों को सलाह दी कि वे अपने ज्ञान का प्रकाश दूसरों तक फैलाएँ और इसे अपना नैतिक कर्तव्य समझें, क्योंकि "आप अपनी शिक्षा को तभी उपयोगी बना सकते हैं जब आप स्वयं को समाज के लिए उपयोगी बनाएं।"

श्री सक्सेना ने उपस्थित लोगों को याद दिलाया कि "माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी, जो एक राजनेता से कहीं बढ़कर एक महान व्यक्ति हैं, उनके नेतृत्व में केंद्र सरकार देश में विश्वस्तरीय शैक्षिक बुनियादी ढाँचा विकसित करने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है।" इसलिए, जहाँ हमारे विश्वविद्यालयों ने बहुत कुछ हासिल किया है, वहीं अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। माननीय उप-राज्यपाल, श्री सक्सेना ने यह कहते हुए समापन किया- "इल्म की हद है कहाँ, कोई बता सकता नहीं, जैसे दरिया का किनारा कोई पा सकता नहीं।"

माननीय उप-राज्यपाल ने छात्रों और शिक्षकों, कुलपति प्रो. आसिफ़ और रजिस्ट्रार प्रो. रिज़वी को शुभकामनाएं दीं और जामिया के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने अपने भाषण का अंत इन शब्दों से किया, जो दर्शकों के दिलों में गहराई तक उतर गए- "हमी वो इल्म के रौशन चराग़ हैं.... जिन को, हवा बुझाती नहीं...., सलाम करती है....।

कुलपति प्रो. आसिफ़ ने कहा, "जामिया का सफ़र लंबा और उल्लेखनीय रहा है। सिर्फ़ 6-7 छात्रों और शिक्षकों वाले एक छोटे से उस्तादों के मदरसे के रूप में अपनी मामूली शुरुआत से, यह विश्वविद्यालय 800 से ज़्यादा संकाय सदस्यों और 24,000 छात्रों के साथ एक विशाल और जीवंत संस्थान के रूप में विकसित हुआ है। एनआईआरएफ़ रैंकिंग में चौथा स्थान हासिल करना और प्रतिष्ठित टाइम्स हायर एजुकेशन ग्लोबल रैंकिंग में शीर्ष केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा पाना इस असाधारण प्रगति का प्रमाण है।"

प्रो. आसिफ़ ने आगे कहा, "हमारा लक्ष्य इस विरासत को और आगे बढ़ाकर आगे बढ़ाना है और एक मेडिकल कॉलेज और अस्पताल स्थापित करने की आशा है, जो जामिया द्वारा प्रदान किए जाने वाले पाठ्यक्रमों की विस्तृत श्रृंखला को पूरा करेगा। हम अपने छात्रों के लिए अतिरिक्त छात्रावास और आवासीय सुविधाएँ विकसित करने और एक अधिक सुरक्षित परिसर की दिशा में काम करने की भी योजना बना रहे हैं। यातायात को सुगम बनाने और सुगमता में सुधार के लिए मुख्य सड़क के पास अंडरपास बनाना भी हमारा लक्ष्य है।"

प्रोफ़ेसर आसिफ़ ने आगे कहा, "इस साल के तालीमी मेले की एक उल्लेखनीय उपलब्धि हमारे संकाय सदस्यों और पुस्तकालय द्वारा 20,000 से ज़्यादा पुस्तकों का दान देना भी रहा है ताकि हमारे छात्रों में पढ़ने की आदत विकसित हो सके। हम जामिया में तालीम और तरबियत दोनों पढ़ाते हैं ताकि हमारे छात्र जामिया की परंपरा और भारतीय संस्कृति व परंपरा के ध्वजवाहक बनें।"

समारोह पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए, प्रो. मज़हर आसिफ़ ने कहा- "यह विश्वविद्यालय के लिए एक भव्य आयोजन रहा। प्रत्येक सांस्कृतिक संध्या में छात्रों की सक्रिय भागीदारी उत्साहजनक रही। ऐसा लगा जैसे हमने वर्षों से ऐसा उत्सव नहीं देखा। संगीत, भोजन और, सबसे महत्वपूर्ण बात, नई शिक्षा नीति के कार्यान्वयन से लेकर मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण तक, विभिन्न विषयों पर सार्थक चर्चाओं के साथ परिसर जीवंत हो उठा।"

प्रोफ़ेसर आसिफ़ ने कहा, "यही शिक्षा का वह विचार है जिसका हम एनईपी के तहत समर्थन करते हैं, जिसमें परिसर का हर अनुभव सीखने को समृद्ध बनाता है और छात्रों को एक पूर्ण व्यक्तित्व के रूप में

गढ़ता है। तालीमी मेला का उद्देश्य जामिया की अनूठी संस्कृति, तहजीब और तरबियत को हमारे छात्रों में स्थापित करना है - ये ऐसे गुण हैं जो उन्हें वास्तव में अलग बनाते हैं।"

अपने संबोधन में, जामिया के रजिस्ट्रार प्रो. मोहम्मद महताब आलम रिज़वी ने आज संपन्न हुए तालीमी मेले में अभूतपूर्व भागीदारी और सफलता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, "पिछले छह दिनों में, हमने अकादमिक उत्कृष्टता, सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक जागरूकता का अद्भुत संगम देखा है। जामिया के विभिन्न विभागों, केंद्रों और संकायों ने इस उत्सव को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पूरे सप्ताह आयोजित शैक्षणिक कार्यशालाओं, व्याख्यानों, प्रदर्शनियों और संवादात्मक सत्रों ने हमारे बौद्धिक वातावरण को समृद्ध किया है और ज्ञान सृजन एवं प्रसार के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को और मज़बूत किया है।"

प्रोफ़ेसर रिज़वी ने आगे कहा, "तालीमी मेला सिर्फ़ एक आयोजन नहीं, बल्कि समाज का एक सूक्ष्म रूप है, जो जीवन के हर पहलू - शैक्षणिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और मानवीय - का प्रतिनिधित्व करता है। खाने-पीने और हस्तशिल्प से लेकर किताबों और कपड़ों तक, सैकड़ों स्टॉलों के साथ, परिसर एक जीवंत दुनिया में तब्दील हो गया, जो जामिया के दर्शन "तालीम से तामीर तक" - शिक्षा से लेकर राष्ट्र-निर्माण तक - के सार को समेटे हुए है।" प्रोफ़ेसर रिज़वी ने आगे कहा, "जामिया मिल्लिया इस्लामिया के लंबे और गौरवशाली इतिहास में, इस साल का तालीमी मेला अब तक के सबसे उल्लेखनीय और जीवंत समारोहों में से एक रहा है।"

प्रो. रिज़वी ने सभी आयोजन समितियों, विशेष रूप से छात्र कल्याण की डीन, प्रो. नीलोफर अफ़ज़ल और उनकी टीम, संकाय सदस्यों और छात्रों, प्रॉक्टोरियल टीम, सफ़ाई कर्मचारियों, सुरक्षा गार्डों और मीडिया टीमों को उनके तालमेल, कड़ी मेहनत और निर्बाध सहयोग के लिए अपना आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर दिल्ली के माननीय उपराज्यपाल, श्री विनय कुमार सक्सेना ने जामिया जर्नल ऑफ़ पीस स्टडीज़ का विमोचन किया, जो पश्चिम एशियाई अध्ययन केंद्र और नेल्सन मंडेला शांति और संघर्ष समाधान केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया द्वारा एक रेफरीड अर्धवार्षिक पत्रिका है, जिसके संपादक प्रोफ़ेसर मोहम्मद महताब आलम रिज़वी और प्रोफ़ेसर एच. ए. नज़मी हैं और संरक्षक प्रोफ़ेसर मज़हर आसिफ़ हैं।

इस वर्ष के तालीमी मेले में कई प्रतिष्ठित हस्तियाँ, नौकरशाह, न्यायाधीश, नीति-निर्माता, बुद्धिजीवी, शिक्षाविद और विचारक एक जीवंत मंच पर एकत्रित हुए। इस आयोजन में शैक्षणिक, सांस्कृतिक और खेल गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल थी, जिसने जामिया समुदाय की जीवंतता और विविधता को प्रदर्शित किया।

छह दिवसीय महोत्सव के समापन के समय, हजारों छात्रों और संकाय सदस्यों ने रोशनी से जगमगाते हुए जेएमआई परिसर में माननीय उपराज्यपाल के समक्ष जेएमआई ध्वज अवतरण करते हुए समारोह का विधिवत समापन किया, जबकि शाम के समय उत्सवों का माहौल रहा, जो एक ऐसे सप्ताह के गंभीर और उल्लासमय समापन का प्रतीक था, जिसे आने वाले वर्षों तक याद रखा जाएगा।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी